छायाचित्र: स्मिथसोनियन नेशनल पोर्ट्रेट गैलरी/स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूशन

द मास्क ऑफ़ लिंकन: अनूठे व्यक्तित्व पर एक दृष्टि

लॉरेन मॉनसेन

स्मिथसॉनियन की प्रदर्शनी में लिंकन की परिवर्तनकारी भूमिका की पड़ताल

अब्राहम लिंकन (1809-1865) अमेरिका के महानतम राष्ट्रपतियों में से एक और अमेरिकी इतिहास के शायद सबसे अधिक प्रशांसित और आकर्षक व्यक्तित्वों में से एक हैं। पीढ़ियों से स्कूली बच्चों, गृहयुद्ध के अध्ययनकर्ताओं और इतिहासविदों के आकर्षण का केंद्र रहे लिंकन आज भी एक अबूझ पहेली बने हुए हैं।

स्मिथसॉनियन इंस्टिट्यूशन की नेशनल पोर्ट्रेट गैलरी में लगी प्रदर्शनी ''वन लाइफ : द मास्क ऑफ़ लिंकन'' लिंकन के अबूझ स्वभाव और देश को उसके गम्भीरतम संकट, अमेरिकी गृहयुद्ध (1861-1865) की वैतरणी पार करवाने वाले उनके गुणों पर केंद्रित है। प्रदर्शनी में दुर्लभ छाया चित्र और लिंकन के जीते जी तैयार किए गए उनके चेहरे के दो मास्कों (प्लास्टर के सांचे) सहित अन्य कई वस्तुएं प्रदर्शित हैं। ये वस्तुएं दर्शक को वास्तविक और अवास्तविक की सीमारेखा पर मौजूद एक ऐसे अस्तित्व के जीवन्त करती हैं जिसे छू पाना अकल्पनीय लगता है।

लिंकन के जीवनकाल में फोटोग्राफी भले ही अपने प्रारम्भिक दौर में थी लेकिन उसने उनके पूर्ववर्ती राष्ट्रपतियों की तुलना में लिंकन के लिए अपनी छवि को दूर-दूर तक प्रसारित करना और यहां तक कि अपनी छवि को काफी हद तक ढालना भी सम्भव बनाया। ''वन लाइफ'' के संग्राहक डेविड वार्ड स्पष्ट करते हैं कि लिंकन ने बहुत जल्द ही नए माध्यम की सम्भावनाओं को पहचान लिया और उसे अपनाया भी।

एक अज्ञात व्यक्ति से एक नामी वकील और फिर जानेमाने राजनीतिज्ञ के रूप में उभरने के दौर में वह नियमित रूप से फोटोग्राफरों के स्टूडियो में जाकर अपनी शबीहें (पोर्ट्रेट) बनवाते थे। वार्ड कहते हैं, ''शुरुआती फोटोग्राफों से पता चलता है कि वह बिज़नेस सूटों में खुद को एक सामाजिक रूप से सशक्त, ज़िम्मेदार चरित्र के रूप में प्रस्तुत करते थे।'' इन चित्रों से उभरी अपनी छवि से लिंकन को निसन्देह ऊंचे पद के लिए एक गम्भीर प्रत्याशी के रूप में स्थापित होने में मदद मिली। वार्ड कहते हैं कि उनकी छवि को ही उन्हें राष्ट्रपति पद की ओर ले जाने का श्रेय दिया जाता है।

हत्या से दो माह पहले अलेक्जेंडर गार्डनर द्वारा 1865 में लिए गए ''क्रैक्ड प्लेट'' फोटोग्राफ में अब्राहम लिंकन चिंताग्रस्त और थके-मांदे नज़र आ रहे हैं।

19वीं सदी के अमेरिका में आगे बढ़ना

''वन लाइफ : द मास्क ऑफ़ लिंकन'' से स्पष्ट पता चलता है कि लिंकन धन के अभाव की अपनी पृष्ठभूमि से निकल पाए तो केवल अपनी बौद्धिकता, करिश्माई व्यक्तित्व और ज़बर्दस्त महत्वाकांक्षा के बूते। उस युग के एक पत्रकार ने लिंकन के बारे में लिखा भी था, ''उनकी महत्वाकांक्षा का यंत्र अनवरत काम करता है।'' लेकिन शुरू में उन्हें कमतर आंकने वालों को भी जल्द ही समझ आ गया कि लिंकन अद्भुत प्रतिभाशाली थे।

वार्ड बताते हैं कि 19वीं सदी में अमेरिका के बीहड़ वातावरण में सफल होने के लिए दो बातें बहुत जरूरी थीं- ''एक तो यह कि आप शारीरिक रूप से बहुत मजबूत हों और दूसरा यह कि आप उस खास

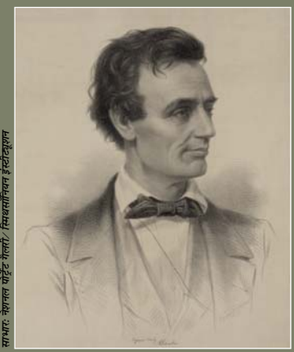

साभार: नेशनल पोर्ट्रेट गैलरी, स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूशन

कॉर्ब सलकोविच © यू.एस. इन्क्वायरी ग्रो.

बिल्कुल बाएं: लियोपोल्ड ग्रोज़्लियर द्वारा 1860 में बनाया अब्राहम लिंकन का लिथोग्राफ।
बाएं: शिल्पकार लियोनार्ड वोल्क द्वारा लिंकन के प्लास्टर से बने मास्क की हूबहू नकल कर 1917 में बनाया मास्क (बाएं)।
लिंकन की हत्या से दो माह पहले 1865 में शिल्पकार क्लार्क मिल्स द्वारा प्लास्टर से बने लिंकन के मास्क की नकल कर 1917 में बनाया मास्क (दाएं)।

ढंग से खुशमिजाज और व्यवहारकुशल हों जो सीमान्त के अनगढ़ लोगों को भी पसन्द आए।'' 6 फुट 4 इंच ऊंचे लिंकन पहली शर्त तो बिल्कुल पूरी करते थे, वह उन्नीसवीं सदी के मध्य में लोकप्रिय मनोरंजन कुल्हाड़े से कटाई की प्रतियोगिताओं के खासे नियमित विजेता हुआ करते थे। और वह ''किस्से और लतीफे भी सुनाते थे'' जो राजनीतिक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण गुण था। वार्ड कहते हैं कि लिंकन की सामाजिकता और खुद पर हंस पाने की क्षमता भी लोगों को उन का मुरीद बना देती थी।

लिंकन की सीधासादा आदमी होने की छवि में सच्चाई तो थी लेकिन इसके पीछे काफी हद तक चतुर अभियान व्यवस्थापकों की मेहनत भी थी। जल्द ही जनमानस में लिंकन प्रेयरी क्षेत्र के आम आदमी से एक राजपुरुष में बदल गए। 1860 के दशक की उनकी कई शबीहें एक शालीन मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में उनकी छवि को पुष्ट करती हैं।

गृहयुद्ध ने उग्र रूप लिया तो लिंकन ने दाढ़ी रख ली, वार्ड मानते हैं कि दाढ़ी उनके व्यक्तित्व पर उस दौर में आधिकारिता की छाप सिद्ध हुई जब एक चिन्तातुर देश उनसे नेतृत्व की मांग कर रहा था। दाढ़ी इस बात का प्रतीक बनी कि वह युद्ध के लिए कमर कस रहे हैं। अपने सेनापतियों, और युद्धभूमि में सैनिकों से उनकी मुलाकातों की तस्वीरों ने भी सशक्त संकेत दिए। वार्ड कहते हैं, ''ये चित्र दिखाते हैं कि वह मुख्य सेनापति के तौर पर सक्रिय रूप से युद्ध में शामिल हैं। वह सेना पर नागरिक नियंत्रण भी प्रदर्शित करते हैं। लिंकन बता रहे हैं कि नियंत्रण उनके हाथ में है।''

परिवर्तन

दक्षिणी राज्यों के खुद को स्वतंत्र देश घोषित करने और दासता का विरोध कर रहे उत्तरी राज्यों के संघ का नैतिक नेतृत्व संभाल कर लिंकन ने अमेरिकी गणतंत्र को बनाए रखने के अटल अभियान की भावना को आत्मसात कर लिया। इसके अलावा, जैसा कि वार्ड कहते हैं, ''लिंकन एक गहन अध्यात्मिक रुझान वाले व्यक्ति थे, लेकिन वह किसी चर्च के सदस्य नहीं थे। परमेश्वर की इच्छा की अपनी दृष्टि के अनुसार आचरण करने की उनकी आदत उन्हें वह कर गुजरने की स्वतंत्रता देती थी जिसे वह उचित मानते थे।''

युद्ध के दबावों ने लिंकन को एक बेहद चुस्त-फुर्तीले राजनीतिज्ञ से इतिहास के अतिमानवों में से एक बना दिया। वार्ड कहते हैं, ''अपने देश की संस्थापक वचनबद्धता को स्वतंत्रता के सिद्धांत से पुनर्संबद्ध कर लिंकन ने अमेरिका के असीम सम्भावनाओं का देश होने के विचार को सत्यापित कर दिया। वह अपने युग के अपरिहार्य व्यक्ति थे।'' ''वन लाइफ : द मास्क ऑफ़ लिंकन'' के सबसे बड़े रत्नों में से एक है, आज ''क्रैक्ड-प्लेट फोटोग्राफ'' से जाना जाने वाला एक एल्बूमेन सिल्वर प्रिंट है जो लिंकन की नियति का संकेत सा देता लगता है। 1865 में अलैक्जेंडर गार्डनर द्वारा खीचीं गई इस तस्वीर में थके और चिंतित लिंकन विचारमग्न मुद्रा में दिख रहे हैं। सीधे कैमरे में झांकते हुए उनके चेहरे पर शोकगीत सी उदासी और गहरी तदात्म्यता दिखती है। फोटो के ऊपरी बाएं कोने से लिंकन के सिर के ऊपरी हिस्से से होती एक कटीपिटी रेखा गुजरती है।

फोटोग्राफर या उसके सहयोगी की लापरवाही से ग्लास-प्लेट नेगेटिव के चटकने के कारण आया यह स्पष्ट दोष इस तस्वीर को विशेष रूप से स्मरणीय बनाता है। हालांकि यह एक साधारण दुर्घटना का ही परिणाम है लेकिन एक स्तर पर यह उस विभाजित देश का प्रतीक है जिसे एकजुट रखने का प्रयास लिंकन कर रहे थे तो दूसरी ओर यह दो महीने बाद हत्यारे द्वारा उन पर दागी गई गोली के प्रक्षेपपथ का पूर्व संकेत भी है।

वार्ड कहते हैं, ''लिंकन हमेशा अपनी जीवंतता को लेकर चैतन्य रहते थे और ''क्रैक्ड-प्लेट फोटोग्राफ'' एक निश्चित जीवन के अंत का संकेत देता है। यह लगभग अदेह बिम्ब है। लिंकन इतिहास में लुप्त होते, हमारी पहुंच से बाहर सरकते से लगते हैं। उनके चेहरे पर रहस्य के भाव को बढ़ाती लियोनार्दो द विंची की महान कृति मोना लिसा की याद दिलाती एक नामालूम सी मुस्कान है। इस फोटोग्राफ को बचा लिया जाना बस खुश किस्मती ही कही जा सकती है क्योंकि इसकी चटक चुकी सतह के कारण इसे रद्दी में भी फेंका जा सकता था। ''

निश्चित रूप से यह प्रदर्शिनी की पारिभाषिक तस्वीर है- यह अमेरिका के 16वें राष्ट्रपति के स्फिंक्स जैसे व्यक्तित्व को पूरी तरह पकड़ पाती है जो अपने जन्म के 200 बरस बाद आज भी मृत्यु के पार से अपने देशवासियों को चकित करता, चकराता रहता है।

''वन लाइफ : द मास्क ऑफ़ लिंकन'' 5 जुलाई, 2009 तक चलेगी।

लॉरेन मॉनसेन America.gov की लेखिका हैं।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

अब्राहम लिंकन

http://www.whitehouse.gov/history/presidents/al16.html

''वन लाइफ़: द मास्क ऑफ़ लिंकन''

http://www.npg.si.edu/exhibit/lincoln/